हर जानकारी विश्वास लायक नहीं

लॉरिंडा कीज़ लौंग

बहुत से शिक्षाविद और संपादक विकिपीडिया विश्वकोश के प्रति अच्छा नज़रिया नहीं रखते क्योंकि विद्यार्थी और कम अनुभवी लेखक इसका इस्तेमाल जानकारी के प्राथमिक स्रोत के रूप में करने लगते हैं, बजाय ऐसी सहायक जानकारी के लिए जिसे किसी लेख या निबंध में शामिल करने से पहले जांचा-परखा जाए और उसकी पुष्टि की जाए।

नकल करके लिखने वालों के लिए भी यह लुभावना स्रोत लगता है। कई पत्रकारों को विकिपीडिया की पाठ्य सामग्री के बड़े हिस्से को हूबहू अपने नाम के साथ प्रकाशित लेखन सामग्री में इस्तेमाल करते पाया गया है। इससे तथ्यों की जांच, रिपोर्टिंग एवं लेखन और ईमानदारी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर संदेह होता है।

यदि लेखक विकिपीडिया की पाठ्य सामग्री को अपने शब्दों में लिखने की चतुराई दिखाता है तो भी तथ्यों की जांच नहीं की जाती। विकिपीडिया के लेख ज़्यादातर मामलों में विषय विशेषज्ञों द्वारा नहीं लिखे जाते। (वास्तव में असली विशेषज्ञों को अपने काम को विकिपीडिया पर उद्धरित करने की मनाही है।)

यह जानना असंभव है कि विकिपीडिया से ली गई कौनसी जानकारी सही है और कौनसी गलत। इससे पाठकों को सटीक जानकारी मुहैया कराने का शैक्षिक या पत्रकारीय लेखन का उद्देश्य प्रभावित होता है।

अमेरिका में कई माध्यमिक स्कूलों ने अपने छात्रों को विकिपीडिया का इस्तेमाल करने से रोक दिया है। कई अन्य संस्थान अपने छात्रों को यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि इसका इस्तेमाल किस तरह साधारण स्रोत के रूप में ज़्यादा विश्वसनीय और प्राथमिक स्रोतों के साथ किया जाए। विश्वविद्यालयों में प्रोफ़ेसर अपने छात्रों को चेता रहे हैं कि विकिपीडिया पर भरोसा न करें। ये शिक्षाविद चिंतित हैं क्योंकि ये चाहते हैं कि उनके छात्र सही जानकारियां और अवधारणाओं को जानें, गलत तथ्यों को नहीं। वे चाहते हैं कि ये छात्र पढ़ते समय यह पूछना भी सीखें कि "ऐसा किसने कहा? और क्या ऐसा कहने वाले व्यक्ति के पास पर्याप्त ज्ञान या अनुभव है जिससे कि मैं भरोसा कर सकूं।" विकिपीडिया इस तरह की जानकारी प्रदान नहीं करता।

केंटकी स्थित मॅरी यूनिवर्सिटी की एसोसिएट प्रोवोस्ट सांद्रा जॉर्डन को विकिपीडिया को लेकर प्रोफ़ेसरों की चिंता के बारे में संस्थान के समाचारपत्र के एक लेख में उद्धरित किया गया है, "मैं सोचती हूं कि ऐसे सूचना स्रोतों जिनको लेकर पसोपेश हो कि उनका इस्तेमाल छात्र करे या न करें, उन पर रोक के बजाय ज़्यादा ज़रूरी यह है कि छात्रों को जानकारी के उपलब्ध स्रोतों के बारे में सही निर्णय लेने में मदद की जाए।"

अप्रैल 2007 में एमिली वश्नर के मॅरी स्टेट न्यूज़ में प्रकाशित लेख में छात्र टाइलर मूर को यह कहते हुए उद्धरित किया गया है कि वह सहायक सामग्री के रूप में विकिपीडिया का इस्तेमाल अब भी करता है। लेकिन उसने अपने शिक्षकों से ऐसे शोध आधारित लेख खोजना सीख लिया है जिनमें "वास्तविक स्रोतों और संदर्भों का उल्लेख होता है।" जब उसने पहली बार विकिपीडिया का इस्तेमाल शुरू किया तो उसका सोचना था, "मैं सोचता था कि मैं साइट पर उपलब्ध सारी जानकारी पर विश्वास कर सकता हूं। मैं नहीं जानता था कि इसमें कोई भी प्रवेश कर सकता है और जानकारी को बदल सकता है या उसमें संशोधन कर सकता है। इसलिए मैंने सारी जानकारी को सही माना।"

गलत जानकारी को साइट पर डालने की समस्या भी है, जैसे किसी ने "ऐतिहासिक फोटो" और नक्शों के साथ अमेरिका और कनाडा के बीच "ऊपरी प्रायद्वीप युद्ध" के बारे में काल्पनिक जानकारी डाल दी। यह युद्ध कभी हुआ ही नहीं लेकिन विकिपीडिया पर इससे संबंधित लेख दो सप्ताह तक बना रहा। अनजान विषयों के बारे में विकिपीडिया के निगरानी कार्यकर्त्ता उतने सचेत नहीं रह पाते।

जब कंपनियां, संगठन, सरकारें, समूह और व्यक्तिगत स्तर पर लोग विकिपीडिया पर अपने खुद के बारे में लिखते हैं (हालांकि साइट का कहना है कि वह इसकी इज़ाजत नहीं देती) या फिर अपने बारे में दूसरों द्वारा लिखे लेखों को अच्छा दिखने के लिए "संपादित" करते हैं या फिर अपने विरोधियों के बारे में लिखे लेखों को बिगाड़ने के लिए उन्हें "ठीक" करते हैं तो दूसरी तरह की मुश्किलें पेश आ जाती हैं।

इंटरनेट संस्कृति पर अपने ब्लॉग http://www.andycarvin.com/archives) में एंडी कार्विन कहते हैं, "युवा और वृद्ध समान रूप से अक्सर विकिपीडिया पर जाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि इसका अनूठापन बरकरार रहे। वे यह मानकर चलते हैं कि यह भी अन्य विश्वकोशों की तरह है और उन्हें इसकी सामग्री को खरा मानना चाहिए जबकि हमेशा ऐसा नहीं होता।"

विकि से जुड़े तथ्य

- विकि शब्द का इस्तेमाल हवाई में जल्दी के लिए होता है।
- विकिपीडिया में 20 लाख से ज्यादा लेख हैं।
- यह 253 से ज़्यादा भाषाओं में है।
- इसका स्वामित्व विकिमीडिया फ़ाउंडेशन के पास है।
- सबसे ज़्यादा खर्च इंटरनेट सर्वर पर होता है जो इसके वर्ष 2006 के वित्तीय आंकड़ों के मुताबिक 189,631 डॉलर था।
- वर्ष 2006 में कुल खर्च 791,207 डॉलर रहा।
- पिछले साल इसे 13 लाख डॉलर का योगदान मिला।

साभार: विकिमीडिया फ़ाउंडेशन, ईंका.